विचार बिन्दु

तू दूसरे की आँख का तिनका क्यों देखता है अपनी आँख का शहतीर तो निकाल। –बाइबल

आजादी के 75 साल बाद राजस्व कानूनों में आमूलचूल परिवर्तन पर गम्भीर चिंतन की आवश्यकता

आजादी के समय राजस्थान छोटे-बड़े रजवाड़ों में बंटा था। उन्हें मिलाकर वर्तमान राजस्थान बना था। राजवाड़ों के राज में राजस्व एकत्र करने का और छोटे-छोटे भूमि विवादों का निपटारे का काम जागीरदारों के माध्यम से होता था। लगन वसूली व राजस्व के विवादों के निपटारे के लिए रियासतों के अपने-अपने कानून थे। आजादी के समय रजवाड़ों और जागीरों में विभिन्न कानूनों के जानकर सीमित संख्या में ही थे। जागीरों में तो यह संख्या ना के बराबर मानों। ऐसी स्थितियों में राजस्थान के अधिकांश राजस्व कानून बने थे।

उस समय बने कानूनों में विवदों के निपटाने के अधिकार तहसीलदार व उसके ऊपर के अधिकारियों को दिए। राजस्थान के निर्माण के समय दक्ष-सक्षम, कानून के जानकार अधिकारियों, कर्मचारियों की कमी थी। तत्समय की राजनीतिक, सामाजिक परिस्थितियों से उत्पन्न होने वाले अवांछित प्रभावों, दबाओं की शंकाओं को ध्यान में रख कर, विवदों के निष्पक्ष निपटारे के लिए तहसील या ऊपर के कार्यालयो के पीठासीन अधिकारियों को अधिकृत किया गया।

वर्तमान में सामाजिक, राजनीतिक, कर्मचारियों-अधिकारियों की शैक्षणिक व प्रशिक्षण की स्थितयां पूर्णत: बदल गई है। अब पटवारी, ग्राम सेवक, सरपंच से लेकर ऊपर तक के अधिकारी ग्रेजुएट-पोस्टग्रेजुट हैं। कुछ कुछ तो इंजीनियर, कानून की डिग्रीधारी है। पटवारियों, निरीक्षकों व अन्य सभी अधिकारियों को सेवा में आने के समय सम्बंधित कानूनों का अध्ययन कराया जाता है, प्रशिक्षण दिया जाता है और परीक्षा लेकर दक्षता जांची जाती है।

वर्तमान स्थितियों में इस श्रेणी के बहुत से मामलों का निपटारा अच्छे पटवारी, निरीक्षक व पंचायत गांव लेवल पर ही कर सकते है। उनके लिए तहसील या उपखण्ड कार्यालय या उसके ऊपर के न्यायालयों में जाने की कोई आवश्यकता नहीं है। ऐसे मामलों के निपटारे के लिए तहसील, एसडीओ या ऊपर के कार्यालयों में जाना, गरीब किसानों के लिए धन और समय की अनावश्यक बरबादी है।

तहसीलदार, एसडीओ, कलेक्टर्स के पास राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं के संचालन, पर्यवेक्षण, अन्य विविध प्रशासनिक व आवश्यक कार्यों का इतना भार होता है कि राजस्व महलों को निपटाने का काम सेकेंडरी कार्य हो गया। राजस्व मामले वर्षों-वर्षों लंबित पड़े रहते है। इस से किसानों के समय व धन की बरबादी होती है। राजस्व मामलों की पेंडेंसी देखने के लिए राजस्व मंडल द्वारा एकत्र व प्रकाशित आंकड़े देखे जा सकते है। इसलिए राजस्व मामले शीघ्र निपटे, अधिक से अधिक मामले ग्राम पंचायत स्तर पर निपटे यह समय की मांग है।

उदाहरण के लिए निम्न प्रकार के मामलो को पंचायत स्तर पर निपटाने के लिए पंचायत, इंस्पेक्टर, पटवारी अधिकृत किए जा सकते है::-- खेतों के पर जाने खेतों के रास्तो के विवाद, सीमा ज्ञान, नामान्तरकरण तस्दीक करना, कृषि भूमियों का बंटवारा, खातेदारों के सामान्य प्रकृति के अधिकार घोषणा के प्रकरण, कृषि भूमि को गैर कृषि कार्यों के लिए कन्वर्शन, टिनेंसिंज के एक्सचेंज व जोतों के कण्डोलीडेसन के मामले, चोसला जमबन्दीय बनाना व मजमे आम में तस्दीक करवाना, नक्शों की तरमिमें, जहां नक्शों में खेत से खेत पर जाने वाले रास्ते सरकारी कर्मचारियों की गफलत से अंकित होने से रह गए-उन्हें अंकित करने, जोहड़ पाइतना में श्मसान भूमियों के आरक्षण-विकाम की समस्या, चारागाह मैनेजमेंट, सरकारी व चारागाह भूमियों पर बने घरों के नियमन आदि ऐसे मामले है जिन पर ग्राम पंचायत- पटवारी-निरीक्षक स्तर पर अधिकृत किया जाना चाहिए। पंचायत स्तर पर कार्यवाही मजमें आम में होने से पकड़कर असत्य बातें कहने से बचेंगे। फैसले जल्दी होंगे, अनावश्यक मुकद्दमेबाजी व उस पर होने वाला अनावश्यक व्यय रुकेगा।

कृषि टिनेंसी कानून बना तब एससी, एसटी के हितार्थ उनके खाते में अंकित भूमियों के ट्रांसफर पर पाबंदियां लगाई ताकि उनकी भूमिया बड़े कृषक हड़प कर उन्हें भूमि हीन न बना दें। अब तो परिस्थितयां पूर्णत: बदल गई। खेतों की भूमियां भी पीढ़ियों में बनते-बनते छोटे-छोटे टुकड़ों में बंट गई। छोटी भूमियों पर कृषि पूर्णत: अनार्थिक बन गई है, ऊपर से भूमि बेच कर अन्य काम-धन्दा करने के लिए बाजार दरों पर भूमि बेच कर धनार्जन भी नही कर सकते। साथ परिवर्तित समयानुसार एससी, एसटी के जिन खातेदारों को आवश्यकता हो वे अपनी भूमि, एक कमेटी द्वारा निर्धारित न्यूनतम विक्रय कीमत से उपर मूल्य पर बेच सकें यह प्रावधान होने चाहिए। इस से एससी, एसटी को अपनी भूमियों का उचित मूल्य मिल सकता है।

विपरीत तर्क देते वक्त लोग भूल जाते हैं कि भ्रष्टाचार सरकार के बड़े दफ्तरों-सचिवालय से लेकर नीचे तक है। कई बड़े-बड़े अफसर, बहुत से मंत्री-जनप्रतिनिधि इस बीमारी से मुक्त है क्या? बहुत से नीचले स्तर व ऊपर के बड़े अधिकारी अत्यंत ईमानदार व कर्तव्य निष्ट भी है और बड़ी संख्या में असक्षम, भ्रष्ट भी है।

खाते की बड़े खेतों की जमीनें बंटते-बंटते छोटे-छोटे टुकड़ों में बंट गई। किसानों की इन टुकड़ों की भूमियां एक साथ न होकर अनेक जगह स्थित है। ऐसे में यदि किसान टुकड़ों में बंटी भूमियों को स्वेच्छा से अदला-बदली कर कंसॉलिडेट करना चाहें तो ग्राम पंचायत स्तर पर यह कार्यवाही सम्पन्न क्यों नही की जा सकती?

कृषि भूमि रूपांतरण के मामलों में कलेक्टर, एसडीओ के पास केवल वे मामले जाएं जो राष्ट्रीय-राज्य हाइवेज-मेजर जिला सड़कों से एक निश्चित दूरी में पड़ने वाली भूमियों के हों तथा नगरीय निकायों की सीमा व पेरिफेरी विलेजेज में आने वाली भूमियों से सम्बंधित हों। अन्य मामलों जैसे कि किसी को गांव में सपनी भूमि पर स्कूल खोलनी है और भूमि, उपरोक्त हाइवेज-स्थानीय निकायों की प्रतिबन्धित भूमि न हो तो, सीसे कन्वर्शन के लिए तहसीलदार, एसडीओ के पास जाने की क्यों आवश्यकता पड़े, ग्राम पंचायत स्तर पर निपटारा क्यों नहीं हो सकता?

खेतों पर जाने के रास्तों की समस्या::-खातेदार सरकार का टेनान्ट है। यह सरकार (लैंड लार्ड) का दायित्व है कि किसान टेनेंसी का उपभोग कर सके उसके लिए रास्तों की व्यवस्था करे।

स्टैंडर्ड प्रैक्टिस थी कि खेत से खेत में जाने के ट्रेडिसनल रास्ते राजस्व नक्शों में डॉटेड लाइन से दिखाए जाते थे और गांव से गांव के रास्ते दो लाइनों में दिखाए जाते है। सरकारी अमले की गफलतों की वजह से बहुत से गांवों में खेत से खेत जाने के रास्ते या तो अंकित ही नही किए या आधे-अधूरे किए है। 20, 30 साल पहले तक गांवों में सौहार्द्रता का माहौल था। इस कारण पारम्परिक रास्तों से आने जाने में कोई रोक-टोका-टोकी नहीं तो। कालांतर में पार्टीबाजी, आपसी द्वेष-शत्रुता के कारण रास्तो के विवाद बड़ी समस्या के रूप में सामने आ रहे हैं।

इसके लिए पहला तात्कालिक समाधान का उपाय है ग्रामपंचत सरपंच, राजस्व निरीक्षक, पटवारी संयुक्त रूप से मोका मुवाईना कर पारम्परिक रास्तों का अंकन करें। विवाद हो तो मजमे आम में सुनवाई कर समाधान करें।

सरकार इसके लिए अभियान चला कर इसका समाधान करे। पहले खेत पर, जोत करने ऊंट बैल जस्ते थे। अब 100 प्रतिशत ट्रैक्टर काम आते है। इसलिए सरकार रास्तो की सटेंडर्ड चौड़ाई तय कर उसे नियम-कानून का रूप देयह काम पंचायत स्तर पर क्यों सम्भव नहीं?

सरकार ने इसका समाधान करने के लिए काश्तकारी कानून में संशोधन कर दिया कि टेनान्ट को रास्ते की दिक्कत है तो एसडीओ के यह प्रार्थना पत्र प्रस्तुत कर रास्ता ले। सम्बंधित किसानों, जिनके खेतों में से रास्ता जाए को मूल्य चुकाए। इस से अधिक अविवेकपूर्ण कानून हो नहीं सकता-लैंडलोर्ड कहता है कि टिनेंसी का उपभोग करना है तो मूल्य चुका कर रास्ता ले लो। जिस किसान को दसों खेतों में होकर अपने खेत जाना हो, वह किस किस से रास्ता लेता फिरे। फिर यह भूमि मूल्य चुकाने वाले के खातेदारी की होगी, वह दूसरों को क्यों उपभोग की अनुमति दे। पूर्णत: अविवेकपूर्ण कानून। यह कानून शहर के आसपास बिल्डर्स के लिए जरूर वरदान है--वे अपनी मर्जी के रास्ता ले सकते हैं।

प्राय: जब नीचे के स्तर के अधिकारियों, संस्थाओं पर अधिकारों के प्रत्यायोजित करने,उन्हें स्वतंत्र रूप से अधिकृत करने की बात आती है तो तर्क दिया जाता है कि वे सक्षम नहीं है, पक्षपात पूर्ण निर्णय होंगे, भ्रष्टाचार बढ़ेगा, भूअभिलेख ढंग से संधारित नहीं होंगे जिसके दूरगामी दुष्प्रभाव होंगे। जब ग्राम पंचायतों को संवैधानिक अधिकार दिए गए, चुनावों के लिए तथा स्वतंत्र रूप से बजट-व्यय के लिए अलग से आयोग बनाए गए पर भी ऐसे ही तर्क दिए गए थे। प्रारम्भिक दिक्कतों के बाद बहुत सी पंचायती राज संस्थाएँ बहुत अच्छा काम कर रही हैं।

विपरीत तर्क देते वक्त लोग भूल जाते हैं कि भ्रष्टाचार सरकार के बड़े दफ्तरों-सचिवालय से लेकर नीचे तक है। कई बड़े-बड़े अफसर, बहुत से मंत्री-जनप्रतिनिधि इस बीमारी से मुक्त है क्या? बहुत से नीचले स्तर व ऊपर के बड़े अधिकारी अत्यंत ईमानदार व कर्तव्य निष्ट भी है और बड़ी संख्या में असक्षम, भ्रष्ट भी है। इसलिए ऐसे तर्क के आधार पर राजस्व कानूनों पर पुनर्विचार व अधिकारों को निचले स्तर पर दिए जाने को रोकना बुद्धिमतापूर्ण नहीं हो सकता।

–अतिथि सम्पादक,
महावीर सिंह,
आई.ए.एस. (से.नि.)

भारत के पास दुनिया को सन्मार्ग दिखाने का समय

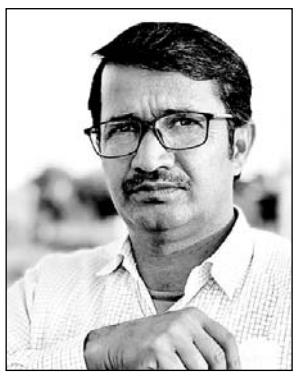

रामगोपाल जाट

- आज दुनिया के 56 इस्लामिक देश भी योग दिवस पर बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं
- 2023 को संयुक्त राष्ट द्वारा मोटा अनाज वर्ष, यानी मिलैट्स ईयर घोषित किया गया है

नये कैलेंडर आरम्भ के साथ ही भारत के पड़ोसी पाकिस्तान में साल के पहले दिन तालिबान का अधिकारिक रुप से आगमन हो गया है। तहरीक ए तालिबान पाकिस्तान, यानी टीटीपी ने जहां खैबर पख्तूनवा और बलूचिस्तान के लिये अपनी अलग सरकार के मंत्रीमंडल की घोषणा करके पाकिस्तानी सत्ता के पांव हिला दिये हैं तो अफगानिस्तान में शासित तालिबान का विस्तार भी इसके साथ पाकिस्तान में हो गया है। अभी तक भी यह साफ नहीं हो पाया है कि यह वही तालिबान है या अलग है, जो काबुल में काबिज है?

एक जनवरी को ही व्लादिमिर पुतिन ने अपने मंसूबे साफ कर दिये, जब पता चला कि रूसी सेना ने यूक्रेन के कीव पर मिसाइल हमलों की बरसात कर दी है। अमेरिका लाख चाहकर भी यह नहीं कह पा रहा है कि वह रूस के खिलाफ अघोषित युद्ध कर रहा है, भले ही वह यूक्रेन को अत्याधुनिक हथियार सप्लाई कर रहा हो। यह युद्ध असल में रूस और अमेरिका के बीच लड़ा जा रहा है, युद्ध की रणभूमि जरूर यूक्रेन की धरती है।

जमीन हथियाने की रणनीति के कारण कुख्यात चीन फिर से अमेरिका के सामने आ गया है। अब दोनों देशों ने चंद्रमा की जमीन पर भी अपने हक को लेकर बयानबाजी तेज कर दी है। अमेरिका ने दक्षिण चीन सागर का उदाहरण देकर चीन की नीति को उजागर किया है। दोनों देशों के बीच ताइवान को लेकर पहले से ही तनाव चल रहा है। कोरोना की जोरदार लहर और उसके कारण दम तोड़ते चीनी उद्योग के चलते जिनपिंग के सामने छात्र आंदोलन को थामना भी बड़ी चुनौती है। भारत ने चीन को इस वक्त पाकिस्तान की श्रेणी में डाल रखा है, जिससे भले कारोबार चल रहा हो, लेकिन राजनैयिक संबंध खत्म कर रखे हैं।

ईरान और इस्त्राइल के बीच फिर से अघोषित जंग ने जन्म ले लिया है। इस्त्राइल अपनी सभ्यता बचाने की नीति पर कायम है। वह चहुंओर से कट्टर मुस्लिम देशों से घिरा होने के कारण खुद को जीवित रखने की असीमित जंग झेल रहा है, तो ईरान पहले ही गृहयुद्ध जैसे हालात से जूझ रहा है।

भारत ने दुनिया के इस दोहरे मापदंड को अब अच्छे से समझ लिया है। पिछले साल ही अमेरिका-यूरोप के संयुक्त दबाव को दरकिनार कर भारत ने रूस से सस्ता कच्चा तेल आयात बढ़ाया है। विगत 10 माह में भारत की रणनीति और विदेश नीति अपने नागरिक हितों के आगे अमेरिकी संबंधों को भी बौना साबित कर चुकी है। एक बार फिर भारत के विदेश मंत्री डॉ. सुब्रम्ण्यम जयशंकर ने यह कहकर अमेरिका-यूरोपीय संघ को स्पष्ट कर दिया है कि यूरोपीयन देश आज भी भारत से छह गुणा अधिक कच्चा तेल और गैस रूस से आयात कर रहे हैं। इसका मतलब यह है कि भारत अपनी रणनीति को किसी विदेश नीति से प्रभावित नहीं होने देगा। अमेरिका को अब यह मान लेना चाहिये कि भारत को दबाव में लेकर अपने हित नहीं साध पायेगा।

21 जून 2014 को विश्व योग दिवस की पूरी दुनिया में शुरुआत भारत के हिसाब से सबसे बड़ा वैश्विक कदम था। संयुक्त राष्ट्र के द्वारा भारत की इस स्वास्थ्य पहल को पूरी दूनिया ने अंगीकार किया। भारत सरकार ने यह साबित करने में कामयाबी पाई है कि योग केवल निरोग करने का आसन है, इसका धर्म या क्षेत्र से लेना-देना नहीं है। आज दुनिया के 56 इस्लामिक देश भी 21 जून को योग दिवस पर बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं।

अब इस साल दूसरा अवसर आया है, जब भारत की अपील पर 2023 को संयुक्त राष्ट द्वारा मोटा अनाज वर्ष, यानी मिलैट्स ईयर घोषित किया गया है। भारत के लिये यह इसलिये प्रसन्नता का विषय है, क्योंकि हमारे यहां पर हजारों वर्ष पूर्व ही ऋषियों इस अनाज का महत्व जान लिया था। आज पूरा विश्व मान रहा है कि मोटा अनाज स्वास्थ्य के लिये केवल भोजन नहीं है, बल्कि इस आधुनिक युग में एक औषधि समान है। भारत के लिये दूसरी खुशी यह भी है कि विश्व में मोटा अनाज का सबसे बड़ा उत्पादक भारत ही है। बाजरा, मक्का, ज्वार, रागी, जौ जैसे अनाज आज भारत के आम आदमी की थाली में होते ही हैं, तो बड़े लग्जरी होटल्स में भी इस अनाज को चाव से खाया जाता है और इसके महंगे उत्पादों को खरीदकर गर्व किया जाता है। डॉक्टर्स का मानना है कि नियमित मोटे अनाज के सेवन से रोगों से छुटकारा भी मिलता है। वैसे भी अनाज तो किसी धर्म, जाति अथवा क्षेत्र से बिलकुल परे है। अत: इसको पूरा विश्व स्वीकार कर रहा है। यूएई जैसे इस्लामिक देश ने मोटा अनाज वर्ष का स्वागत किया है।

अमेरिका, यूरोप, जापान ने भी मिलैट्स ईयर का स्वागत किया है। भारत को केवल इतना करना है कि अपने दोनों समय के भोजन में बहुलता से व्याप्त रहे मोटे अनाज को फिर से उसी तरह से शामिल करना है। आधुनिकता से परहेज किसी को नहीं है, लेकिन जब बात स्वास्थ्य की हो, तो फिर वही खायें, जो शरीर को हष्ट-पुष्ट रखे, ताकि रोगों से छुटकारा पाया जा सके। अब समय आ गया है, जब भारत का बाजरा, मक्का, रागी, ज्वार जैसे अनाज को विदेशों में निर्यात किया जाये। भारत सरकार को चाहिये कि इसके साथ ही दुनिया में यह नैरेटिव भी सिद्ध करने का प्रयास करे कि विश्व को भारत की यह एक और शानदार सौगात है। जिन देशों में अनाज की कमी रहती है, वहां पर इसका प्रसार अधिक किया जा सकता है, क्योंकि जल की कमी अनाज पैदा करने में बाधक बनती है, जिससे ऐसे गरीब देश मोटा अनाज पैदा कर छुटकारा पा सकते हैं।

एक समय ऐसा था, जब भारत विश्व को मार्ग दिखाता था। आज भी स्थितियां धीरे-धीरे इसी ओर जा रही हैं। विश्व जहां हिंसा से जूझ रहा है, तो धार्मिक अंधता ने कई देश बर्बाद कर दिये हैं। आतंकवाद को जड़ से तभी खत्म किया जा सकता है, जब मानव का विचार शुद्ध होगा। विचार की शुद्धि का रास्ता अच्छे खान-पान से निकलता है। भारत ने दुनिया को बहुत कुछ दिया है। भारतीय सभ्यता का अभिन्न अंग योग पूरा विश्व स्वीकार कर चुका है और मोटा अनाज वर्ष शुरू हो चुका है। अब भारत सरकार को चाहिये कि श्रीमद्भागवत गीता को कर्मयोगी पुस्तक के साथ विश्व की श्रेष्ठ पुस्तक का दर्जा दिलाने का प्रयास शुरू करे, ताकि आतंक से जूझ रही दुनिया को कर्मयोगी बनकर एक सन्मार्ग मिल सके। युद्ध से जीतना आसान है, लेकिन विचार को बदलना ही तो सबसे बड़ी जीत है। भारत यदि ऐसा करने में सफल होता है, तो मानव जाति के लिये इससे बड़ा पुण्यकर्म क्या हो सकता है?

रामगोपाल जाट,
वरिष्ठ पत्रकार

पावरग्रिड की सौर उर्जा की पारेषण प्रणाली राष्ट्र को समर्पित

जयपुर, (कासं)। गुरूग्राम 03.01.2023 देश की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्म ने दिनांक 3 जनवरी, 2023 को जयपुर स्थित राजभवन में आयोजित एक समारोह में विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार की महारत्न कंपनी पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (पावरग्रिड) द्वारा राजस्थान के भड़ला, फतेहगढ़ और बीकानेर क्षेत्र में 8.9 गीगावॉट सौर ऊर्जा के लिए निर्मित पारेषण प्रणाली को वर्चुअल माध्यम से राष्ट्र को समर्पित किया। इस अवसर पर राजस्थान के माननीय राज्यपाल श्री कलराज मिश्र और राजस्थान के माननीय मुख्यमंत्री, श्री अशोक गहलोत उपस्थित थे। इस समारोह में राजस्थान सरकार, केन्द्र सरकार और पावरग्रिड के वरिष्ठ अधिकारीगण भी मौजूद थे।

नवीनकरणीय ऊर्जा के लार्ज स्केल ग्रिड इंटीग्रेशन के माध्यम से देश में तीव्र गति से एनर्जी ट्रांजीशन हो रहा है। वर्ष 2030 तक, 500 गीगावॉट से अधिक गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित उत्पादन क्षमता की परिकल्पना की गई है और भारत सरकार ने अक्षय ऊर्जा की प्राप्ति के लिए विभिन्न इंटर स्टेट पोरषण योजनायें बनाई है।

भारत सरकार की इस महत्वाकांक्षी लक्ष्य को पूरा करने के लिए प्रथम चरण के अंतर्गत, राजस्थान से 8.9 गीगावॉट सौर ऊर्जा प्राप्त करने की परिकल्पना की गई है, जिसके तहत पावरग्रिड परिसरों जैसे भाड़ला 3.55 गीगावॉट, फतेहगढ़ 3.5 गीगावॉट और बीकानेर 1.85 गीगावॉट आदि से विद्युत ऊर्जा प्राप्त करने के लिए अंतर-राज्य पारेषण प्रणाली को विकसित किया है। इस परियोजना के तहत पावरग्रिड द्वारा फतेहगढ़, भड़ला और खेतड़ी में 3 उपकेन्द्र, 1872 सर्किट मिं ईएचवी ट्रांसमिशन लाइन और 12,500 एमवीए ट्रांसफॉर्मेशन क्षमता जोडी गई है और इस क्षेत्र के सोलर परिसर अब हाई कैपेसिटी पारेषण नेटवर्क के माध्यम से राष्ट्रीय ग्रिड से जुड गए है। इस परियोजना की कुल लागत 4928 करोड रूपये है।

31 दिसम्बर 2022 को पावरग्रिड और उसकी सहायक कंपनियों की कुल पारेषण परिसंपत्तियों में 1,73,791 सर्किट किमी पारेषण लाइनें, 270 सब स्टेशन और 4,93,042 एमवीए की ट्रांसफॉर्मेशन क्षमता सम्मिलित है।

मारवाड़ी हॉर्स शो - 2023 का रणसी गांव में शुभारम्भ

जोधपुर के रणसी गांव में कृषि व पशुपालन मंत्री लाल चन्द कटारिया व आर टी डी सी के चेयरमैन धर्मेंद्र सिंह राठौड़ ने हॉर्स शॉ का शुभारम्भ किया।

जोधपुर, (कासं)। दो दिवसीय द्वितीय मारवाड़ी हॉर्स शॉ- 2023 का शुभारम्भ बुधवार को रणसी गांव में कृषि व पशुपालन मंत्री लाल चन्द कटारिया व आर टी डी सी के चेयरमेन धर्मेंद्र सिंह राठौड़ ने अश्वों के देवता रेंवत के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्जवलित कर किया। उन्होंने बताया कि इस वर्ष देश,प्रदेश के लगभग 550 अश्व भाग लेने आये हैं। उन्होंने बताया कि शॉ में राजस्थान, पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश

- देश, प्रदेश के लगभग 550 अश्व भाग लेने आये हैं

, तमिल नाडु ,हरियाणा व उत्तर प्रदेश सहित अन्य राज्यों के अश्व पालक अपने अश्व लेकर भागीदारी निभा रहे है चंपावत ने बताया कि मारवाडी हॉर्स शॉ में पहले दिन बुधवार को अदंत बछेरी, अदंत बछेरा, दो दांत बछेरा प्रतियोगिता हो रही है। गुरुवार को दो दांत बछेरी, नर अश्व, मादा अश्व व बेस्ट एनिमल ऑफ शॉ की चार प्रतियोगिताऐं होगी।

अदंत बछेरा प्रतियोगिता में प्रथम राजदीप गोहिल गुजरात का राज करंट, द्वितीय सुरेन्द्र सिंह का शेरबाज, तृतीय हर प्रीत सिंह पंजाब का लालदेव रहा। समारोह में उद्घाटन के अवसर पर विधायक बिलाडा हीरालाल मेघवाल, व प्रधान बिलाडा प्रगति कुमारी, धवल सिंह पाटिल व रणजीत पंवार विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

बच्चे पढते नहीं हैं : दोषी करार देना बन्द करें सोचिए उन्हें क्या चाहिए

राजेन्द्र मोहन शर्मा

- पंचतंत्र की कहानियां व्यावहरिक जीवन में खूब सहायता करती हैं

आजकल माता-पिता की यह शिकायत आम हो गई कि उनके बच्चों की पुस्तकों में रुचि कम और मोबाइल गेम्स में अधिक हो गई है। यद्यपि यह कथन पूरी तरह सही नहीं है, अभी हाल ही में एक सर्वेक्षण में इस बात का खुलासा हुआ है कि 87 प्रतिशत से भी अधिक बच्चे किताबें पढना चाहते हैं और उनकी रूचि साफ तौर पर किताबों के बारे में स्पष्ट है। वे यह भी जानते हैं कि उन्हें क्या पढना है और वे अपनी पसंद की किताब पुस्तकालय से संग्रहित कर सकते हैं। यह दुर्भाग्य की बात है कि इतनी सारी स्पष्ट स्थिति के बावजूद अभिभावक अपने बच्चों को समुचित किताबें उपलब्ध नहीं करा पा रहे हैं। हम अपने भारतीय जीवन से जुड़ी महत्वपूर्ण किताब को भूलकर आगे बढेंगे तो हम न्याय नहीं कर पाएंगे। पंचतंत्र एक ऐसी ही पुस्तक है जिसे पता नहीं कितने अभिभावकों ने खुद पढा है या नहीं। मेरा तो आग्रह रहेगा कि कम से कम आप एक बार पंचतंत्र की कथाओं को जरूर पढें। यूं तो हम सभी जानते हैं कि बच्चों का मानसिक विकास कहानियां, चित्रकथाएं पढने और पहेलियां सुलझाने के साथ ही माता-पिता और शिक्षकों से बेझिझक बातचीत करने से बढ़ता है। बाल मनोविज्ञान के अनुसार बच्चे के पांच वर्ष तक सहज रूप में जानकारी देनी चाहिए जिससे उसमें उत्सुकता और सीखने की लगन को बढ़ानी चाहिए। बाल्यकाल में उसे हर ओर से भरपूर प्यार-दुलार मिलना चाहिए। यदि इस उम्र में उसको बुरे अनुभव होते हैं तो इसका असर उसके भविष्य पर पड़े बिना नहीं रहता है।

संस्कृत की नीति कथाओं में पंचतंत्र का पहला स्थान माना जाता है। पंचतंत्र एक विश्वविख्यात कथा ग्रंथ है। मनोविज्ञान, व्यावहारिकता तथा राजकाज के सिद्धांतों से परिचित कराती पंचतंत्र की कहानियां दुनिया भर में प्रसिद्ध हैं। इस किताब का अनुवाद विश्व की लगभग हर भाषा में हो चुका है। इस किताब के आधार पर ही दुनिया में इसी तरह की हजारों अन्य किताबें लिखी जा चुकी हैं। पंचतंत्र को पांच निबंध या पांच अध्याय में विभक्त होने के कारण इसे पंचतंत्र कहा गया है।

यह पुस्तक लोकप्रियता के सौपानों पर सवार कैसे हुई इस पर डॉक्टर हर्टेल बताते हैं कि पंचतंत्र का अनुवाद छठी शताब्दी में ईरान की पहलवी भाषा में हो गया था। यही नहीं हर्टेल ने पंचतंत्र का विश्व की 50 भाषाओं में इसके 200 अनुवादों का उल्लेख किया है। छठी शताब्दी 550 ई. में जब ईरान के सम्राट 'खुसरू' थे तब उनके राजवैद्य और मंत्री ने 'पंचतंत्र' को अमृत कहा था। आठवीं शताब्दी 760 ई. में पंचतंत्र की पहलवी अनुवाद के आधार पर 'अब्दुलाइन्तछुएमुरक्का' ने इसका अरबी अनुवाद किया जिसका अरबी नाम 'मोल्ली व दिमन' रखा गया। इस तरह पंचतंत्र की कहानियां मिस्त्र और योरोप में भी प्रसिद्ध हो गईं और वहां की स्थानीय भाषा में इसका अनुवाद किया गया। यूरोप में इस पुस्तक को द फेबल्स ऑफ बिदपाई के नाम से जाना जाता है।

पंचतंत्र में अंकित सारी ही कहानियां बड़े ही रोचक तरीके से सामने रखकर बालकों को बहुत ही अच्छी सीख देती हैं। व्यावहरिक जीवन से जुड़ी ये कहानियां हकीकत जीवन में खूब सहायता करती हैं। दरअसल ये कहानियां बहुत जीवंत हैं ये कथाएं मानव स्वभाव को समझने और सावधानीपूर्वक व्यवहार करने की समझ को व्यापक रूप से विकास करती हैं। पंचतंत्र में 5 भागों में विभाजित कुल 87 कथाएं हैं जिनमें से अधिकांश प्राणी कथाएं हैं।

पंचतन्त्र की कथाएं पाठकों को कस कर गुदगुदाती है, उनसे ठहाके लगवाती है और सोचने को विवश करती है। अब मैं यहां इस लेख में आपको पंचतंत्र की कहानियां तो नहीं पढवा सकता हूँ लेकिन यह जरूर कहूंगा कि अब भी देर नहीं हुई आप भी पढें और घर भर के बच्चों को जरूर पढाएं। याद रखें बचपन में पनपी पढने-लिखने की आदत मनुष्य को जीवनभर काम आती है और सबसे बड़ी बात अच्छे-बुरे का विवेकसम्मत फैसला लेने योग्य बनाती है।

राजेन्द्र मोहन शर्मा,
साहित्यकार, शिक्षाविद एवं चिन्तिक

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

गुरूवार 5 जनवरी, 2023

पौष मास, शुक्ल पक्ष, चतुरशी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2079, मृगशिरा नक्षत्र रात्रि 9:36 तक, शुक्ल योग प्रात: 7:33 तक, गर करण दिन 1:08 तक, चन्द्रमा प्रात: 8:06 से मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-धनु, चन्द्रमा-वृष, मंगल-वृष, बुध-धनु, गुरू-मीन, शुक्र-मकर, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

रवियोग आज रात्रि 9:26 तक है। आज प्रदोष व्रत, रोहिणी व्रत (जैन)।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 8:34 तक, चर 11:14 से 12:32 तक, लाभ-अमृत 12:32 से 3:07 तक, शुभ 4:25 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:43

मेष

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

वृष

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। नवीन कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आय में वृद्धि होगी। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

मिथुन

नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क

व्यक्तिगत परेशानियों के कारण मानसिक तनाव और मन में असंतोष बना रहेगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा।

सिंह

आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

कन्या

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। शुभ कार्यों में भाग ले सकते हैं।

तुला

शुभ-मांगलिक कार्यों के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। नवीन कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

वृश्चिक

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

धनु

परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

मकर

विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। मन:स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ

व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन

घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।